Self Respect

13-09-2014

❖यह भी गीता का ज्ञान है जो बाप तुम्हें सम्मुख बैठ सुनाते हैं, जिससे तुम राजाओं का राजा बनते हो । फिर भक्ति मार्ग में यह गीता शास्त्र आदि बनेंगे । यह अनादि ड्रामा बना हुआ है । फिर भी ऐसे ही होगा ।

❖ अभी तुम्हारी बुद्धि में सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी नाच रही है । बुद्धि ज्ञान डांस कर रही है । तुम सारे झाड़ को जान गये हो ।

❖ तुम बच्चे कमाई के लिए कितनी नॉलेज आकर पढ़ते हो । बाप टीचर बनकर आते हैं तो आधाकल्प तुम्हारी कमाई का प्रबन्ध हो जाता है । तुम बहुत धनवान बन जाते हो । तुम जानते हो अभी हम पढ़ रहे हैं । यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों की पढ़ाई । भक्ति को अविनाशी ज्ञान रत्न नहीं कहेंगे । भक्ति में मनुष्य जो कुछ पढ़ते हैं, उनसे घाटा ही होता है | रत्न नहीं बनते ।

❖ बाप आकर अज्ञान नींद से सुजाग करते हैं । अभी तुमको ज्ञान की धारणा होती जाती है । बैटरी भरती जाती है । ज्ञान से है कमाई, भक्ति से है घाटा ।

❖ तुम जानते हो - हम इस कर्म- क्षेत्र पर कर्म का पार्ट बजाने आये हैं । कहाँ से आये हैं? ब्रह्मलोक से । निराकारी दुनिया से आये हैं इस साकारी दुनिया में पार्ट बजाने । हम आत्मा दूसरी जगह की रहने वाली हैं । यहाँ यह 5 तत्वों का शरीर रहता है । शरीर है तब हम बोल सकते हैं । हम चैतन्य पार्टधारी हैं ।

❖ सच बाप सुनाते हैं तो तुम बच्चे सच्चे बन जाते हो । सचखण्ड भी बन जाता है ।

❖यह हम नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं - राजयोग की पढ़ाई से ।

❖ हद के बाप से हद का वर्सा, बेहद का बाप विश्व का मालिक बना देते हैं । तुम सुखधाम में जायेंगे तो बाकी सब शान्तिधाम में चले जाएंगे । वहाँ तो है ही सुख ही सुख ।

❖मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।